International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 73-75

समकालीन कहानी : बदलते सामाजिक संबंध ओर जीवन मूल्य में द्वंद्व

[1] Dilraj Meena, [2] Dr. K.L Raigar
[1] Research Scholar, Department of Hindi Jai Narayan Vyas University, Jodhpur, Rajasthan, India
[2] Supervisor, Department of Hindi Jai Narayan Vyas University, Jodhpur, Rajasthan, India

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की रंजनात्मक विद्याओं में कहानी का स्थान सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण हैं। कहानी अपने लघु कलेवर रुप में सम्पूर्ण सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिवेश को परिवर्तन रुप में चित्रित करने वाली लोकप्रिय विद्या हैं। लोक कल्याण की शवना और लोकरंजक तत्त्व का जितना सुन्दर समन्वय इस विद्या में हुआ हैं साहित्य की अन्य विद्या में नही मिलता। कहानी बदलते हुए समय और समाज के साथ चलते हुए निरंतर अपने को नया रुप रंग में ढालती रही हैं। आजादी के बाद भारत में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवर्तन को रेखांकित करने के लिए कहानी विद्या में कई आंदोलन चले जैसे नयी कहानी, सहज कहानी, समान्तर कहानी, सचेतन कहानी, जनवादी कहानी आदि। समकालीन कहानीकारों ने बदलते सामाजिक परिवेश को देखा परखा और अपनी अनुभूति के यथार्थ धरातल पर नये स्वर को अभिव्यक्त किया। समकालीन कहानी का यहीं दृष्टिकोण कहानी आंदोलनों की संकीर्णताओं से मुक्त करके निखरा रुप प्रदान करता हैं। कुछ विद्वानों ने इसे कहानी आदोंलन में रेखांकित करने का प्रयास किया लेकिन नये भाव बोध शैली शिल्प, कथ्य और भाषा ने अलग बनाये रखा। समकालीन परिवेष ने कहानी के तथ्य, कथ्य और रूप संरचना को एक तरफ प्रतिमान दिया दूसरी तरफ अनेक आयाम यथार्थ रूप में उभरकर सामने आये। समकालीन कहानी की अवधारणा भूमण्डलीकरण, वैष्वीकरण ओर वैज्ञानिक विकास रहा हैं। जिससें सामाजिक परिवेश में आर्थिक विषमता, नयी और पुरानी पीढी में मूल्य संघर्ष, पारिवारीक संबंधों में बिखराव, युवा पीढी में नवीन मुल्य संघर्ष, भय, निराशा, अकेलापन आदि की छटपटाहट को चित्रित कर अपने समकालीन होने का अर्थ स्पष्ट करती हैं। इस संदर्भ में मधुरेश का कथन स्पष्ट करता हैं कि "समकालीन होने का अर्थ सिर्फ समय के बीच होनें से नही हैं। समकालीन होने का अर्थ हैं समय के वैचारिक और रचनात्मक दबावों को झेलते हुए उनसे उत्पन्न तनावों ओर टकराहटों के बीच अपनी सर्जनशीलता द्वारा अपनें होने का प्रमाणित करना।"[1] समकालीन में रहने और जन्म लेने से समकालीन नही होता हैं बल्कि समकालीन परिस्थितियों के कारण सामाजिक परिवेश में आये परिवर्तन की कसमकश को चित्रित करना समकालीन कहानीकार के दायरे में आता हैं। आजादी के बाद भारतीय जन मानस की नयी चेतना, नया विश्वास तथा सामाजिक संबंधों, मूल्यों, आदर्षो में आये परिवर्तन को अभिव्यक्त करने में समकालीन कहानीकारों के साथ साथ कहानी आंदोलन से संबंधित लेखकों का स्मरणीय योगदान रहा हैं। साहित्यकार समय के बंधन से मुक्त रह कर ही समाज के अंतरंग को यथार्थ दृष्टि से अभिव्यक्त करने में सफल होता है। समकालीन कहानी के केन्द्र आम आदमी संघर्ष, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी एवं हाशिए के अन्य समाज विमर्श, अल्पसंख्यक समाज विमर्श, भुमण्ड़लीकरण एवं बाजारवाद के कारण उभरता नया समाज आदि प्रमुख हैं।

समकालीन कहानीकारों ने अपने समय को पूरी सत्यता के साथ चित्रित करते हुए मानव मन में चलने वाले अंर्तद्वंद्व एवं परिवर्तित जीवन मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक जीवन की विकट समस्याओं को विषय वस्तु बनाया। समकालीन समाज को चित्रित करने वाले ओर कहानी को विकास गति प्रदान करने वाले प्रमुख कहानीकारों मे संजय, गंगाप्रसाद विमल, उदय प्रकाश, ज्ञानरंजन, ज्ञानविवेक प्रकाश, शिवमूर्ति, गोविंद मिश्र, मदन मोहन, अवधेश प्रीत आदि के अतिरिक्त महिला कथाकारों में मन्नू भंडारी, मालती जोशी, सुर्यबाला, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, मंजुल भगत, सुधा अरोडा, प्रभा खेतान आदि प्रबुद्ध लेखक लेखिकाओं का योगदान रहा। यह कहानियाँ विकसित युग के परिवर्तन को चित्रित करने की आवश्यकता की सहज परिणति हैं। सामाजिक सरोकारों से जुड़कर समाज के आम आदमी की पीड़ा, पाश्चात्या सभ्यता और संस्कृति, वैष्वीकरण और बाजारीकरण से उत्पन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण करने में सफलता अर्जित की हैं। समकालीन कहानीयों में समाज का कोई भी अंग अनछुआ नही रहा हैं। डॉ. पुष्पपाल सिंह ने कहानी के वैविध्यपूर्ण स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि श्समकालीन कहानी में जीवन यथार्थ का कोई अंग अनछुआ नही रहा हैं जो आज के मनुष्य ने जिस जिस रूप में जिंदगी को देखा भोगा उस सबका प्रमाणित दस्तावेज समकालीन कहानी प्रस्तुत करती हैं। समय सच्चाईयों को स्वीकार इस कहानी का प्रमुख स्वर हैं। आज कहानी जीवन के बडे अंतरंग का परिचय देती हैं। इस अंतरंग परिचय में किस प्रकार के आदर्शो एवं मुल्यों की रक्षा का मोह नही हैं। इसलिए समकालीन कहानीकार वर्तमान में जो देख या भोग रहा है उसे पूरी शिद्दत से कहानी में उतार रहा हैं।"[2] समकालीन कहानीयों में प्रेमचन्द युग का आदर्शवादी चोंला उतार फेंका है यह अब मानव समाज जीवन की पड़ताल करती नजर आती हैं। आजादी के बाद भारतीय सामाजिक परिवेश में कांतिकारी परिवर्तन हुआ। सयुंक्त परिवार जो हमारी परपंरा रही हैं वह धीरे धीरे एकल परिवार का रूप लेने लगी जिससें समाज में अशांति, ईर्ष्या, स्वार्थीपन, दुख, अकेलापन, हिंसा आदि का प्रकोप बढ़ा हैं। समकालीन कहानीयों में पुरानी पीढ़ी और नवीन पीढ़ी में संबंधों और मुल्यों के बदलते स्वरूप अधिक चित्रित किया। आज की युवा पीढी पुराने मुल्य का त्याग कर नवीन मुल्य का सर्जन कर रहा है और समाज परिवार से धीरे धीरे कटता जा रहा हैं तथा उसमें पारिवारिक संबंधों दादा-दादी, माता-पिता, भाई-बहिन जैसे पवित्र रिश्तों के प्रति अपनत्व और आत्मीयता प्रेम का लोप होता जा रहा है। मानवीय मुल्यों और आदर्शों का त्याग कर स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या का वरण कर रहा हैं। आज का व्यक्ति झूठ, फरेब और दिखावटी जिदंगी जी रहा है। संजय की कहानी 'वांछित अवांछित' में इस खोखलेपन जिदंगी को चित्रित किया है श्प्रेम वफा आत्मीयता रिश्तें संवेदनाएँ सारे मुल्यों के मूल में पैसा स्वार्थ और व्यावसायिकता हैं।"[3] आज की युवा पीढी के मूल में अर्थ निहित हैं इसलिए संबंधों को तिलांजलि दे रहा हैं। आदर्श मुल्य प्राय नष्ट से हो गए हैं।

समकालीन कहानीकारों ने समाज में व्याप्त इन विद्रूपताओं को चित्रण करने में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। डॉ. पुष्पपाल ने समकालीन लेखकों की समाज के प्रति दायित्य बोध एवं यथार्थ दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए लिखा हैं कि श्सामाजिक संबंधों और पारिवारिक रिश्तों के पुर्नमुल्यांकन में वह किसी प्रकार की रागात्मक या रुमानियत से प्रभावित नहीं रहा हैं। उसनें उन सबकों यथार्थ की खुरदरी जमीन पर जाँच परखकर निस्संग दृष्टि से आँका हैं।"[4] कहानीकारों ने बिना किसी दबाव के समकालीन समाज यथार्थ को स्वतंत्र रुप से अभिव्यक्त किया हैं। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की चकाचौंध में व्यक्ति दिशाहीन हो गया और उसकी अनैतिक मुल्यों के प्रति ललक बढ़ी है। व्यक्तिवादी सोच के परिणाम स्वरुप मनुष्य के समक्ष अनेक समस्याएँ सामने खड़ी हुई है।

वर्तमान समाज में पंरपरागत मूल्यों को धारण करने वाले बुजुर्ग पिता की दयनीय स्थिति और नवीन संबंधों को जन्म देने वाली युवा पीढी का यथार्थ चित्रण समकालीन कहानीयों में हुआ हैं। ज्ञानरंजन की 'पिता' कहानी में दोनो पीढ़ीयों के कसमसाते मुल्य द्वंद्व का चित्रण हुआ हैं। पंरपरागत रुढियों व मुल्यों से चिपके पिता के परिवार वाले उसके दैनिक कार्यशैली रहन सहन खान पान शषा संस्कृति पूजा पाठ का पुरजोर विरोध करते हैं। युवा पीढी को यह अटपटा ही नही लगता हैं बल्कि उनके मान मर्यादा को भी ठेस पहुँचाता है। नयी जीवन-पद्धति के अनुरूप आचरण करने और उपलब्ध सुख-सुविधओं का उपभोग करने के लिए मनाने की तमाम कोशिशों के बावजूद पिता का एक बुलंद भीमकाय दरवाजे की तरह है खड़े होकर सबसे निहायत पिद्दी और दयनीय बनाते रहना बेटों के मन में उनके प्रति उदासीनता पैदा करता हैं। पुत्र पिता से कहता है कि श्कई बार कहा मुहल्लें में हम लोगों का मान सम्मान है चार भले लोग आया जाया करते हैं आपको अन्दर सोना चाहिए ढंग के कपड़े पहनने चाहिए ओर चोकीदारों की तरह पहरा देना बहुत भद्दा लगता हैं।"[5] दो पीढ़ीयों के बीच इन द्वंद्वों से परिवार में तनाव दुख बना रहता है जिससें एक दूसरे के प्रति अपनत्व आत्मीयता की नींव कमजोर होती हैं। समाज में बढ़ते अमानवीयता ओर संवेदनहीनता को समकालीन कहानीयों में यथार्थ अभिव्यक्त हुआ हैं। ग्रामीण समाज में मानवीय मुल्य, मानवीय सवेंदनाएँ अभी मौजूद हैं लेकिन शहरों में आदर्श मुल्य धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं। उदय प्रकाश की 'तिरिछ' कहानी में शहरी समाज में व्याप्त अमानवीयता, सवेंदनाहीनता को व्यक्त करने की अजीब छटपटाहट परिलक्षित होती हैं। शहरी समाज में इंसान का व्यवहार यांत्रिक और आत्मकेन्द्रित होता जा रहा हैं इसलिए उसमें संवेदना और सहनशीलता का अभाव हैं। तिरिछ नामक विषखापर से आहत पिता शहर में इलाज कराकर अपनी पीड़ा से मुक्ति पाना चाहता हैं लेकिन शहरी लोग उसको पागल समझकर पीट पीटकर मार डालते हैं। "उनकी कनपटी, माथे, पीठ और शरीर के दूसरे हिस्सों पर कई ईंट और ढेले आकर लग गये थे। सड़क का ठेका लेने वाले ठेकेदार अरोड़ा के बीस-बाइस साल के लड़के संजू ने उन्हें दो-तीन बार लोहे के रॉड से मारा था।"[6] बुजुर्ग के साथ समाज परिवार में ऐसा व्यवहार मनुष्य सभ्यता पर कलंक हैं। उदय प्रकाश की 'छप्पन तोले का करधन' कहानी में तो सम्पूर्ण मानवीयता को शर्मसार कर दिया। बुढी दादी के करधन न देने पर उसके प्रति किये गये अमानवीय व्यवहार का यथार्थ चित्रित किया है। श्एक बार एक महीनें तक दादी को अन्न का दाना तक नही दिया गया पच्चीस दिनों तक चाची ने दादी के खाने में धूल और मिट्टी डाली।"[7] कहानी में लोभ लालच के कारण सारे नैतिक मुल्यों को ताक पर रख बुर्जग महिला के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया।

वैष्वीकरण और बाजारीकरण के बढ़ते प्रभाव से समाज में फैलती हिंसा, अनैतिकता, अमानवीयता का यथार्थ चित्रण समकालीन कहानीयों में अभिव्यक्त हुआ हैं। आज के दौर में सामाजिक पारिवारिक संबंध सम्पति और स्वार्थ के घेरे में सिकुड़ कर रह गये हैं। भारतीय समाज में विवाह सात जन्मों का पवित्र रिश्ता माना जाता हैं आज वह सिर्फ समझोता बनकर रह गया जो विपरित परिस्थिति में सात दिन सात मिनिट में तोड़ा भी जा सकता हैं। सुर्यबाला की कहानी 'मानसी और मुड़ेर' समाज के भावात्मक काया लोक की सच्चाई अंकित करती है भावात्मक दृष्टि से पूर्ण दाम्पत्य संबंधों में उनके यहाँ विवाह स्मृतियाँ का विशिष्ट महत्व हैं इनका उपयोग दाम्पत्य जीवन के तनाव को विस्मृत करने के लिए करती है। संजीव की कहानी 'लोड़ शैड़िंग' वर्तमान संबंधों का सच बयाँ करती है श्दरअसल संबंधों को हम जी नही रहे है महज निबाह रहे है भैया मुझे और शीला को निबाहते निबाहते थकने लगे है इसे शीला भी समझती है और में भी। ऊपर से हम शौम्य शिष्ट है मगर अन्दर ही अन्दर चोर निगाहों से एक दूसरे को देखने लगे हैं।श्[8] विवाह संबंधी खोखलेपन को उजागर करने वाली कहानियाँ यथेष्ट मात्रा में लिखी गई है। रविन्द्र कालिया की 'नो साल छोटी पत्नि' कहानी में दाम्पत्य संबंध जहाँ पत्नि के लिए भार हैं वहीं पति के लिए श्पत्नि उसके लिए दाल रोटी का पर्याय बन गई है जिसे पेट भरने के लिए खाना तो पडता है लेकिन जिसमें कोई तृप्ति नही होती।"[9] समकालीन कहानी में पारिवारिक संबंध जैसे दाम्पत्य संबंध माता-पिता का संबंध, भाई-बहिन का संबंध आदि सब बोझ बनकर रह गये है। आदर्श और मुल्यों की जननी माने जाने वाली भारतीय नारी आधुनिक होने के बावजूद भी अपने में समाज मुल्य और संस्कारों को बचाये रखने की कोशिश करती हैं लेकिन पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव वश बदलाव आने लगा जिससे दाम्पत्य संबंधों में बिखराव आने लगा। सूर्यबाला की कहानी 'निर्वासित' में नारी के शेष मुल्य संस्कारों को चित्रित किया है आज बेटे बहु की श्रद्धा पिताजी के लिए ये बुढ़े लोग कहकर भर्त्सना करता हो लेकिन परिवार में आदर देते है। "आज का पुरुष कितना ही आधुनिक क्यों न हो गया हो किंतु पत्नि रूप में उसकी नारी कल्पना किसी न किसी अंश में उस पंरपरागत मुल्यों से अवश्य जुड़ी होती है जिसमें पति-पत्नि की पूर्ण अनुगता बनकर आती है वैचारिक धरातल पर वह चाहे इसका विरोध करता हो किंतु व्यवहार रुप में वह इसका आकांक्षी अवश्य रहता है।"[10] आज नारी पंरपरागत और नवीन मुल्यों के द्वंद्व में अपना दाम्पत्य जीवन जी रही है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को कुचलकर रख दिया। पारिवारिक संबंधों की धुरी केवल अर्थ तन्त्र में सीमित हो गई। समाज में मुक्त यौनाचार, विवाहपूर्व संतान, प्रेम विवाह, दाम्पत्य संबंध विच्छेद तथा अनैतिक यौन संबंध जैसे तत्व पनपने लगे है। वैज्ञानिक विकास ने मानव समाज के मानसिक विकास के साथ-साथ भारतीय सभ्यता संस्कृति विनाश का रास्ता भी साफ कर दिया। जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव युवा पीढ़ी के संबंधों पर पड़ा वह संबंधों को निभाना तो दूर स्वीकार ही नही करता है उसको एकाकीपन का जीवन ही सुखद लगता है। समकालीन कहानी लेखकों ने युवा पीढी की बदली मानसिकता को यथार्थ चित्रित करने का भरसक प्रयास किया हैं। राजी सेठ की कहानी 'यही तक' का नायक पिता से अनैतिक बात करता है श्न आप मेरे बाप है न में आपका बाप आपके मेरे बीच कोई रिश्ता ही नही बनताए रिश्तों के नाटक है सारे।"[11] उसके यहाँ रिश्तों के लिए कोई स्थान शेष बचा ही नही है बचा है तो स्वार्थ, हिंसा, अनादर, अन्याय जैसे अनैतिक मूल्य तत्व।

समकालीन कहानियों में नारी के प्रति बढ़ती हिंसा, शोषण, बलात्कार, हत्या आदि का यथार्थ चित्रण अभिव्यक्त किया। आधुनिक नारी ने शिक्षा का हाथ थामकर अंधेरी काल कोठरी से अपने आप को मुक्त कर लिया हैं लेकिन वह इस स्वतंत्र समाज में सुरक्षित नही है। बढते अपराधीकरण से पता चलता है कि नारी न घर में सुरक्षित है न बाहर। अरविंद कुमार की 'चुहे' कहानी नारी की

वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करती है श्पहले उनकी छोटी बच्ची पर हमला हुआ उसकी एक अंगुली नोंच ले गए फिर पत्नि ने चीखकर बताया कि उनकों भी नोंच गया है और आज तिसरी बार लगातार उनकी अंगुलियों को कुतरा गया था। ये एक नही अनेक थे बल्कि सैकडों की तादाद में।"[12] वर्तमान में रोज घटने वाली घटनाओं को अंजाम देने वाली युवा पीढ़ी जो कभी भी किसी की बेटी, माँ, बहन की इज्जत को तार तार करने में जरा भी हिचक करते हैं। बलात्कार, हिंसा जैसी समस्याएँ सिर्फ भारत की ही नही है बल्कि अन्य देश में भी यह समस्या घर कर गयी हैं। और आज पूरा विश्व इस समस्या से जुझ रहे है।

समकालीन दौर में शिक्षा के जन प्रचार ने साक्षरता तो विकसित की किंतु नवशिक्षित वर्ग में परंपरा एवं संस्कार, शिष्टता और मानवीय मुल्यों, आदर्शो का विकास न कर सकी। देश समाज में व्याप्त साम्प्रदायिक, आंतकवाद, भ्रष्टाचार आदि ने अवसरवादिता को बढ़ावा दिया। इन सभी समस्याओं के प्रति आवाज उठाना समय की माँग थी जिसका श्रेय समकालीन लेखक को मिला। आज देश में युवा पीढ़ी बेरोजगारी की भीषण समस्या से गुजर रही है जिससे हिंसा, असवेंदनशील और आत्महत्या जैसे भावों उनके मन मस्तिष्क में घर कर गये। इस समस्या के पीछे सरकार की अनियंत्रित राजनीति का हाथ हैं। राजनेताओं ने समाज में कोई उत्कृष्ट आदर्श नही रखा हैं इसलिए आज राजनीति में नीति का अभाव हैं। समकालीन राजनीति का यथार्थ चित्रण करते हुए ज्ञानवति अरोरा लिखती हैं कि श्समकालीन राजनीति आज वह राजनीति नही है जो देश की व्यवस्था को नियंत्रित करती हो। यह तोड फोड की राजनीति हैं। कुर्सी का राजनीति हैं, दाँव पेच और धर पटक इसके साधन है। अशांति असुरक्षा भय हिंसा राउड़िज्म आदि इसकी विशिष्टताएँ है जिसके बल पर टिकी रहती हैं।"[13] देश में भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक, आतंक राजनीति की आढ़ में घटित होता हैं आज की राजनीति नही चाहती की देश में सौहार्द, शांति और प्रेम बढ़े। राजनीति और साम्प्रदायिकता का बढता भय असगर वजाहत की कहानी 'सारी तालीमात' सुबोध कुमार की 'चबूतरे' ओर ज्ञान प्रकाश की 'अलविदा दोस्त' आदि कहानियों में अभिव्यक्त हुआ हैं। साम्प्रदायिकता देश समाज का विनाश ही नही करती बल्कि मानवीय संबंधों भावनाओं और मुल्यों को भी ध्वस्त कर देती हैं। जाति के नाम पर लोगों में दंगे फसाद कराने बहुत कुछ राजनीति का ही हाथ होता हैं। ज्ञान प्रकाश की 'अलविदा दोस्त' कहानी में एक दोस्त हिन्दू दुसरा मुस्लिम, दोनों का प्रेम एक प्राण दो शरीर की तरह था लेकिन 1984 के साम्प्रदायिक दंगो के कारण समाज ने दोनों को अलग कर दिया। दोनों की घनिष्ट दोस्ती साम्प्रदायिक जातिवाद की भेंट चढ गई। कहानी के अन्त में लिखा हैं कि श्फसाद मकान ही नही झुलसाता, भावनाएँ भी झुलसा देता है।"[14] कहकर साम्प्रदायिकता के वीभत्स रूप को स्पष्ट कर देता हैं। देश में जातिवाद और धर्म कभी भी दो जाति समुदाय को गले नही मिलने देती हैं वह उनके बीच में दीवार बन कर खडी हो जाति हैं। वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में आये प्रत्येक स्तर के परिवर्तन को समकालीन कहानी ने अपने वैविध्य स्वरुप में यथार्थ अभिव्यक्त किया। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के बढ़ते प्रभाव ने भारतीय सांस्कृतिक प्रतिमानों को धूमिल कर डाले। जीवनयापन की विषम आर्थिक स्थितियाँ, वैज्ञानिकरण और तकनीकी विकास से उत्पन्न विभिन्न समस्याएँ एवं पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के भयावह त्रासद परिणाम से स्त्री जीवन में मानसिक बदलाव आया। स्त्री मानव संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। समाज में स्त्री के कई रुप जैसे- माँ, बहन, पत्नि और बेटी होते हैं। नारी को देवी का प्रतिक रुप मानते हैं लेकिन समय और समाज के बदलते विविध आयामों ने नारी को असुरक्षा का चोला पहना दिया जहाँ कभी भी वह बलात्कार, हत्या, शोषण आदि की शिकार होती हैं। संस्कृति की जननी भारतीय नारी अब अपने परंपरागत संस्कारों, मुल्यों और आदर्शो को त्याग कर अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की तलाश में बाहर निकल पडी हैं। मन्नू भंडारी की 'क्षय' उषा प्रियवंदा की 'मछलियाँ' ज्ञानरंजन की 'संबंध' और 'शेष होते हुए' आदि कहानियों में स्त्री स्वतंत्रता और सांस्कृतिक मुल्यों के संकट को चित्रित किया हैं। मंदिर, पूजा-पाठ, रीति-रीवाजों और त्योहारों में पनपने वाले सांस्कृतिक मुल्य व संस्कार आज क्लब, होटल, फैशन, परेड़, संस्था आदि की ओट में सिमट कर रह गये। आधुनिकता की भागदौड़ में भारतीय नारी के समयाभाव के कारण संतान को अच्छी शिक्षा, संस्कार, मुल्य, आदर्श नही दे पायी जिससें युवा पीढी में मुल्यों और आदर्शो का अभाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्षत समकालीन कहानी एक ओर राजनीति की इकहरी और यांत्रिक निष्कर्षो वाली सोच से मुक्त हुई है वही दुसरी ओर समाज राष्ट्र के सदर्भो में अधिक गंभीर और बेबाक सवालों के सामने खड़े होने की कोशिश पर हैं। आज की कहानी की मूल चिन्ता किसी न किसी स्तर पर मानवीय मुल्यों से जुड़ी है। आधुनिकता की अन्धी दौड़ में गाँवों और शहरों में विलुप्त होती मानवीय संवेदना, दो पीढ़ीयों के बीच मुल्य द्वंद्व, संयुक्त परिवार का विघटन, दाम्पत्य संबंधों में बिखराव और पाश्चात्य सभ्यता में कसमसाती भारतीय संस्कृति आदि विषय का यथार्थ चित्रण किया हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मधुरेश : नई कहानी पुर्नविचार
2. डॉ. पुष्पपाल सिंह : समकालीन हिन्दी कहानी पृष्ठ संख्या 38
3. संजय : ब्लेक हाल संग्रह : वांछित-अवांछित कहानी पृष्ठ संख्या
4. पुष्पपाल सिंह : समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ पृष्ठ संख्या 23
5. ज्ञानरंजन : पिता कहानी
6. उदय प्रकाश : छप्पन तोले का करघन : पहल पत्रिका अंक 27 पृष्ठ संख्या 243
7. संजीव : लोड़ शैड़िग : आप यहाँ हैं कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 44
8. सूर्यबाला : निर्वासित कहानी
9. संपादक ऋषिकश, राकेश रेणु : राजी सेठ : यही तक : समकालीन हिन्दी कहानीयाँ पृष्ठ संख्या 70
10. अरविंद कुमार : चूहे कहानी
11. ज्ञानवति अरोरा : समकालीन हिन्दी कहानी यथार्थ के विविध आयाम पृष्ठ संख्या 22
12. ज्ञानप्रकाश विवके : अलविदा दोस्त कहानी